समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



कक्षा - 7

हिंदी (पल्लव)

अध्याय – 3

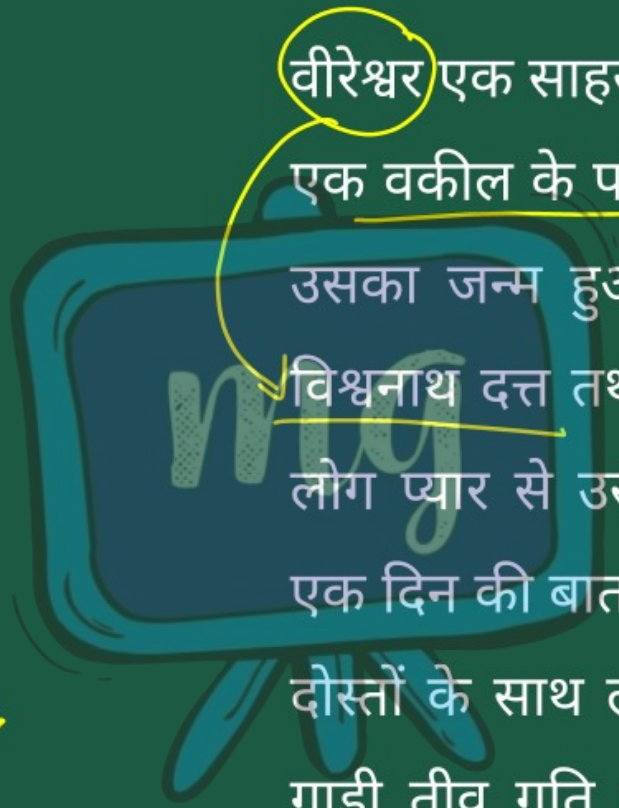
एक तेजस्वी और दयावान बालक

भाग – 1

मिताली कुमारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



वीरेश्वर एक साहसी बालक था। उत्तरी कोलकाता के एक वकील के परिवार में 12 जनवरी, 1863 ई. में उसका जन्म हुआ था। उसके पिता का नाम था विश्वनाथ दत्त तथा माँ का नाम भुवनेश्वरी देवी था। लोग प्यार से उसे 'बिले' नाम से भी पुकारते थे। एक दिन की बात है। वीरेश्वर एक मेला देखकर कुछ दोस्तों के साथ लौट रहा था। अचानक एक घोड़ा-गाड़ी तीव्र गति से आ गई और एक छोटा बच्चा गाड़ी के नीचे आ गया। सभी देखते ही रह गए।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

वीरेश्वर ने अपने साहस का परिचय देते हुए बड़ी फुर्ती से उस बच्चे को गाड़ी के नीचे से निकाला। सभी ने उसकी प्रशंसा की।

बालक वीरेश्वर के मन में दया का भाव भरा हुआ था। उसमें एक विशेष आदत थी, दान की। जरूरतमंद को देखकर अपने पिता की ही तरह वह जो भी कीमती वस्तु हो दान कर देता था, यहाँ तक कि स्वयं के कपड़े भी। कभी-कभार माँ इस कारण से उसे कमरे में बंद कर देती थीं।

तब भी वह रास्ते से गुजरते हुए भिखारियों को बुलाकर खिड़की से कमरे का सामान दे देता था। मजबूर होकर माँ को कमरा खोल देना पड़ता था।

दिन व दिन वीरेश्वर बड़ा होने लगा। वह स्कूल भी जाने लगा। माँ ने स्कूल में उसका नाम रखा नरेंद्रनाथ। कोलकाता के विद्यासागर मेट्रपलिटन स्कूल में उसकी पढ़ाई शुरू हुई। नरेंद्रनाथ लिखाई-पढ़ाई में भी तेज था। दोस्तों के साथ खेलकर समय बिताना उसे ज्यादा पसंद था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

लेकिन जब भी पढ़ता था मन लगाकर पढ़ता था। धीरे-धीरे पढ़ाई में उसकी रुचि बढ़ने लगी। वह साहित्य, दर्शनशास्त्र, इतिहास आदि विषयों पर गंभीर अध्ययन करने लगा। प्रवेशिका परीक्षा में नरेंद्रनाथ प्रथम विभाग में उत्तीर्ण हुआ। उसके बाद कुछ दिनों के लिए प्रेसिडेंसी कॉलेज में भी अध्ययन किया। तत्पश्चात जनरल एसंब्लिज कॉलेज में उसने दाखिला लिया। आज यह कॉलेज स्कॉटिस चर्च कॉलेज नाम से परिचित है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कॉलेज में पढ़ते समय नरेंद्रनाथ का प्रिय विषय रहा दर्शनशास्त्र। यूनान, जर्मनी आदि देशों के दर्शनशास्त्र का उसने विस्तारपूर्वक अध्ययन किया। उसके मन में तरह-तरह के प्रश्न उठने लगे। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ते हुए वह एक दिन दक्षिणेश्वर काली मंदिर के साधक रामकृष्ण परमहंस के पास पहुँचा। उनके विचारों और सिद्धांतों से वह इतना प्रभावित हुआ कि उन्हें अपना गुरु मान लिया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अपने गुरु की छत्रछाया में नरेंद्र ने वेद, उपनिषद, गीता आदि का अध्ययन किया। गुरु रामकृष्ण परमहंस ने उसे बेसहारे और पीड़ित लोगों की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

पिताजी विश्वनाथ दत्त के आकस्मिक निधन के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई। उस समय नरेंद्र बी. ए. पास कर कानून की पढ़ाई कर रहा था। परिवार का दायित्व उसके नाजुक कंधों पर आ पड़ा। नरेंद्र को पढ़ाई छोड़नी पड़ी।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

मूल्यांकन

Under CSR Support by
ipca | Foundation



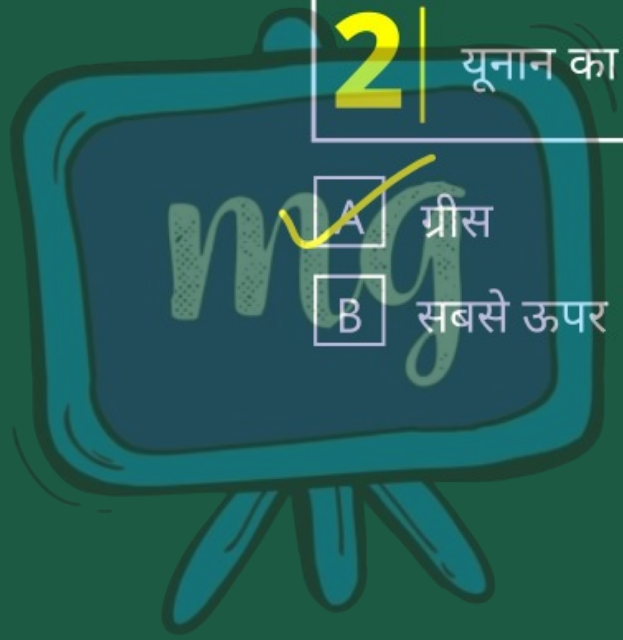
1 | तमाम का मतलब हैं-

A सारा

B कोमल

मूल्यांकन





2 यूनान का मतलब हैं-

A ग्रीस

B सबसे ऊपर

मूल्यांकन



3 | जरूरतमंद का मतलब हैं-

A ✓ जिसे आवश्यक हो

B अभ्यास